# 28

# भारत में प्रमुख धार्मिक समुदाय

भारत में कई धार्मिक समुदाय हैं। लाखों लोग भारत में उपजाऊ जमीन के लिए अच्छे स्रोतों और अवसरों के लिए तथा निर्दयी राज्यों से बचने के लिए यहाँ आये। साथ ही वे कई संस्कृतियों को भी लाये। इन संस्कृतियों का एक भाग धर्म था। मोटे तौर पर भारतीय धर्मों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है – वे धर्म जिनकी उत्पत्ति स्थानीय है, दूसरे वे जो विश्व के अन्य भागों से यहाँ आये। धर्मों की स्थानीय श्रेणी में हम हिन्दू धर्म को रख सकते हैं और वे धार्मिक आंदोलन जो भारत की भूमि पर पैदा हुए, बाद में चलकर स्वतन्त्र धर्म बन गये। इन धर्मों में बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म हैं। दूसरी श्रेणी के धर्मों में जरदूस्त्र, यहूदी धर्म, इसाई और इस्लाम हैं। भारत में कोई धर्म अपनी पृथकता नहीं निभा सका। हमारे यहाँ ये धर्म बाहर से पैदा हुए धर्मों से पृथक नहीं रह पाये। स्थानीय और बाहरी धर्मों के मिलन से भारत की संस्कृति सांझा बन गयी।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:

- भारत के विभिन्न धर्मों की विशेषताओं को जान सकेंगे;
- विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच की अन्त:क्रिया की प्रकृति को समझ सकेंगे; और
- भारत में पाये जाने वाले धर्मों की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

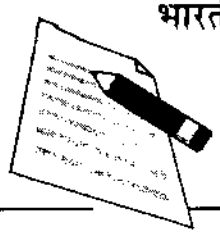

Notes

## 28.1 धर्म

सबसे पुराने धर्म की विशेषताएँ और अपेक्षित रूप से नये धर्मों के लक्षण नीचे दिये जा रहे हैं।

### 28.1.1 हिन्दू धर्म

भारत की लगभग 83 प्रतिशत जनसंख्या हिन्दू है। भारत से बाहर भी हिन्दू एशिया के अन्य देशों में पाये जाते हैं। अफ्रीका, फीजी और ब्रिटेन में भी हिन्दुओं का निवास है।

हिन्दू धर्म विश्व के सबसे अधिक प्राचीन धर्मों में से एक है। इसकी जड़ें ई.पू. 3000 वर्ष पहले सिन्धु घाटी सभ्यता में खोजी जा सकती हैं। पुरातत्वविद यह बताते हैं कि इस सभ्यता में लोग शिव और शक्ति की उपासना करते थे। इस उपासना की अवधि आर्यों से पहले 3000-2000 ई. पू. है। इतनी लम्बी अवधि के धर्म में स्पष्ट रूप से हिन्दू धर्म में बहुत बड़ी विभिन्नता है। किसी अन्य धर्म के विचारों और व्यवहार में उतनी विभिन्नता नहीं होगी।

हिन्दू धर्म की शिक्षा किसी एक पवित्र पुस्तक में नहीं है। इस धर्म का कोई भी एक संस्थापक नहीं है। हिन्दू अगणित देवी-देवताओं को पूजते हैं, इसके बावजूद उनमें एक ईश्वर की अवधारणा है। इसी में से सब कुछ पैदा होता है और इसी में सब समाहित हो जाते हैं। एक तरफ जहाँ हिन्दू धर्म बहुदेववादी (एक से अधिक देवी-देवताओं की उपासना) है। दूसरी ओर यह एक देववादी है, जहां एक ही देवता की पूजा की जाती है। यह जानना बहुत रुचिकर है कि हिन्दू होने के लिए किसी को भी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखना जरूरी है। इसके विपरीत हिन्दू धर्म में कई परस्पर विरोधी विश्वास पाये जाते हैं। इस धर्म में कोई विशेष विश्वास और व्यवहार नहीं है जो सभी हिन्दुओं में समान रूप से पाया जाय। इस धर्म में बहुत बड़ा पवित्र साहित्य है जैसे कि वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, पुराण, दर्शन आदि हिन्दू धर्म के अंग हैं। ये ग्रन्थ दार्शनिक मुद्दों पर विचार करते हैं। कई कर्मकाण्ड हैं जो मंदिरों और घरों में सम्पन्न किये जाते हैं। ये ग्रन्थ उपनिषदों, कर्मकाण्डों का विवेचन करते हैं और इन सबमें बड़ी विविधता है। हिन्दू धर्म का हिन्दू समाज से निकट सम्बन्ध है, ऐसी अवस्था में यह बताना बहुत मुश्किल है कि कहाँ कौनसा ग्रन्थ समाप्त होता है और कौन सा प्रारम्भ। वास्तव में कुछ लेखकों का यह कहना सही है कि *हिन्दू धर्म को हमें एक जीवन पद्धति की तरह समझना चाहिए।* हिन्दू धर्म का सामाजिक आधार जाति व्यवस्था है। ऋग्वेद का कहना है कि जाति व्यवस्था का उद्गम ईश्वर से है। चार वर्णों की समाजिक श्रेणी पुरुष से हुई है। वर्णों की उत्पत्ति में अछूत श्रेणी को कोई स्थान नहीं था। जाति व्यवस्था का चार वर्णों का यह मॉडल इसी कारण चतुर्वर्ण कहलाता है।

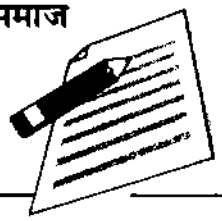



वास्तविकता यह है कि हमारे यहाँ चार वर्ण नहीं कई जातियाँ हैं जो कि अन्तर्वैवाहिकी है। अर्थात व्यक्ति अपनी जाति में ही विवाह कर सकता है। प्रत्येक जाति के अपने-अपने व्यवसाय हैं। जब हिन्दू शास्त्रों में जाति का उल्लेख किया जाता है, तब इसका मतलब वर्ण से होता है। हिन्दू धर्म के मूल में केन्द्रीय भावना पवित्र और अपवित्र की है और इसलिए एक जाति दूसरी जाति से भिन्न है।

कुछ अवधारणाएँ जो हिन्दू धर्म की केन्द्रीय अवधारणाएँ हैं उन्हें **धर्म, कर्म** और **मोक्ष** कहते हैं। धर्म शब्द का आशय है **कर्म**। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति को अपनी जाति, लिंग और उम्र के अनुसार जो धर्म दिया है उसे करना चाहिए। पिछले जन्मों में मनुष्य ने जो भी कार्य किया है उसी के अनुसार, व्यक्ति या जानवर पर इस तरह से जन्मों का चक्र चलता रहता है। जन्मों के इस चक्र से उसे स्थायी मुक्ति नहीं मिल सकती। यह मुक्ति तो मोक्ष द्वारा ही मिलती है और इस कारण प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य मोक्ष होता है। और यह मोक्ष तभी मिलता है जब वह गृहस्थ जीवन के सभी कर्त्तव्यों को पूरा कर लेता है।

हिन्दू धर्म के इतिहास में कई परिवर्तन आये हैं। अंग्रेजों ने कई हिन्दू रीति-रिवाजों, संस्थाओं की निन्दा की है, उदाहरण के लिए अस्पृश्यता, सती, नरबलि, स्त्री शिशुहत्या इत्यादि। 19वीं शताब्दी के कई महान् धर्म सुधारक हैं। राजा राममोहन रॉय जिन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना 1828 में की। वे कहते हैं कि हमें पुन: वैदिक धर्म की ओर जाना चाहिए तथा जो बुरे रीति-रिवाज हिन्दू धर्म में हैं उन्हें त्याग देना चाहिए। इन धार्मिक सुधारकों में दयानन्द सरस्वती भी थे, जिन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। इसमें इन्होंने बताया कि हिन्दुओं को वैदिक धर्म की ओर पुन: लौटना चाहिए। दूसरे परिवर्तन जो हिन्दू धर्म में आये हैं इनका कारण धर्म निरपेक्षता, समानता और विवेक है।

### 28.1.2 पारसी धर्म

पारसी धर्म लगभग 3000 वर्ष पुराना है। पुराने धर्मों में यही एक ऐसा धर्म है, जो जीवित है। इस्लाम के आने से पहले पारसी धर्म एक महत्वपूर्ण धर्म की तरह आया तथा इसकी आज भी पहचान है। इस धर्म की जड़ें पूर्वी इरान, आदिवासी और मूल रूप से चरवाहों के समाज में पायी जाती है। इसकी उत्पत्ति ईसा पूर्व 1000 वर्ष पूर्व हुई और इरानी साम्राज्य के विकास के साथ यह धर्म जुड़ा हुआ है।

यह धर्म संभवत: पहली शताब्दी में था, इसके संस्थापक जोराक्टर में हैं। कहा जाता है कि जिस समय इसका जन्म हुआ संसार पापी लोगों के हाथ में था। इस पाप को देखकर पृथ्वी माता सर्व-शक्तिमान के सामने गयी। तब धरती माता का स्वरूप गाय

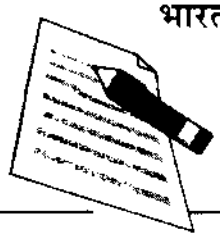

का था। ईश्वर प्रकट हुए, उन्होंने कहा कि दुनियाँ में जो बुराइयाँ हैं उन्हें नष्ट करने के लिए वह एक यशस्वी व्यक्ति के रूप में जन्म लेगा और उसका नाम जोरास्टर होगा। कहा जाता है कि इरान के राइ शहर में जोरास्टर पैदा हुआ। यह डर था कि वहाँ का निर्दयी राजा जोरास्टर को मार देगा तब उसे उसके नाना के घर भेज दिया गया। जोरास्टर ने जो धर्म बनाया उसे अहुरामजदा कहते हैं। मजदा का मतलब है ज्ञानी ईश्वर। मजदा का कोई स्वरूप नहीं है। वह निराकार है, उसके उपदेशों को *गथा* में रखा गया है।

पारसी धर्म में पृथ्वी का स्थान बहुत बड़ा है। यह समझा जाता है कि पृथ्वी ही मनुष्य मात्र को जीवित रखती है। जीवन में पारसी पृथ्वी को अपना सब कुछ मानकर चलता है, अपनी मृत्यु के बाद वह पुन: पृथ्वी के पास आ जाता है। अग्नि किसी भी पारसी का बाहरी प्रतीक है। एक पारसी को यह उपदेश दिया गया है कि उसे अग्नि की पूजा करनी चाहिए और अग्नि परमात्मा की ही उपज है। इसी कारण पारसी कभी भी अपने शरीर को जलाते नहीं हैं, यह इसलिए नहीं किया जाता कि यदि शरीर को अग्नि से जोड़ दिया जाये तो यह अपवित्र शरीर अग्नि को अपवित्र कर देगा। इसी कारण पारसी न तो मृत शरीर को जलाते हैं और न ही उसका जल दाह करते हैं। मरने के बाद शरीर को दीवारों से बने हुए कुएँ में जो आकाश की ओर खुला होता है, डाल दिया जाता है। इसको *दखमा* कहते हैं। यहाँ पर मृत शरीर को खुला छोड़ दिया जाता है, जिसे पक्षी खा जाते हैं और शरीर की हड्डियां सूरज, पानी और वायु से समाप्त हो जाती हैं। दखमा को टावर भी कहते हैं। और टावर में जो भी हड्डियां होती हैं वे पृथ्वी माता में समा जाती है। पारसी धर्म में दो महत्वपूर्ण तत्व आवश्यक हैं – पृथ्वी और अग्नि। ये दोनों ही पवित्र हैं। इरान के लोगों ने अपने धर्म को पारसी धर्म भी कहा है।

पारसी धर्म भारत में 8वीं शताब्दी में आया। पारसियों का समाज बहुत छोटा है, आज इनकी जनसंख्या एक लाख के बराबर है। पारसी प्राय: भारत के पश्चिमी भाग में पाये जाते हैं। पारसियों में कुछ परिवारों ने औद्योगिक सफलता पायी है। टाटा पारसी हैं, इसी तरह गोदरेज। कहा जाता है कि भारत में आधुनिकीकरण के पुरोधा पारसी रहे हैं। देश में ऐसे कई समुदाय हैं, जो पारसियों को अपना आदर्श मानते हैं।

## पाठगत प्रश्न 28.1

निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(1) भारत में हिन्दुओं की अनुमानित जनसंख्या कितनी है?

---

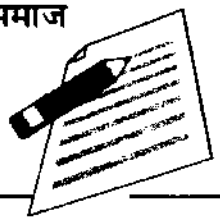



(2) हिन्दू विश्व में और कहाँ-कहाँ पाये जाते हैं?

---

(3) किस सभ्यता में हिन्दू धर्म की जड़ें पायी जाती हैं?

---

(4) इस्लाम से पहले इरान का कौन सा धर्म था?

---

(5) भारत में पारसी कहाँ पाये जाते हैं?

---

### 28.1.3 बौद्ध धर्म

सम्राट अशोक के शासन काल (273-236 ई. पू.) में बौद्ध धर्म ने भारत में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया । बौद्ध धर्म के लिए मिशनरी अंदाज में प्रचार होने के कारण यह धर्म सारे भारत में फैल गया। स्वयं अशोक ने अपने पुत्र और पुत्री को बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए भारत के विभिन्न भागों में भेजा। भारत के बाहर भी यह धर्म फैल गया और 12वीं शताब्दी में इसका प्रसार दूसरे देशों में भी हो गया। उत्तरी भारत में हर्ष वर्धन तथा पाल सम्राटों ने बौद्ध धर्म को एक शक्तिशाली संरक्षण दिया। लेकिन अन्य राजकीय परिवारों ने ब्राह्मण धर्म को अपना सम्प्रदाय माना।

पाल सम्राटों के काल में यह विश्वास बंध गया कि बौद्ध धर्म के अनुयायी तान्त्रिक विद्याओं को काम में लाने लगे और यह इस धर्म का पतन का कारण था। इस तरह बौद्ध धर्म की व्याख्या स्वीकार नहीं की जाती। देखा जाय तो बौद्ध धर्म के शक्तिशाली केन्द्र विहार थे। बाद में चलकर मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इन विहारों को नष्ट कर दिया और इस तरह बौद्ध धर्म के केन्द्र के रूप में ये विहार समाप्त होने लगे। इधर दूसरी ओर हिन्दू धर्म ने भी बौद्ध धर्म को आगे बढ़ने से रोक दिया। केवल यही नहीं हिन्दू धर्म ने प्राच्य विद्या को आगे बढ़ाया। साथ ही हिन्दू धर्म ने बौद्ध धर्म की रीति-रिवाजों को अपना लिया।

आज बौद्ध धर्म को नेपाल में ही राज धर्म की प्रतिष्ठा प्राप्त है। इसके पुरोहितों को तान्त्रिक पुरोहित भी कहते हैं। ये तान्त्रिक पुरोहित विवाहित होते हैं। बौद्धों के इस सम्प्रदाय को वेज्राचार्य बौद्ध भी कहते हैं। यह सम्प्रदाय जो तिब्बत का है, अपनी उत्पत्ति को लद्दाख, सिक्किम, भूटान और नेपाल से भी जोड़ता है। भारत में तिब्बती शरणार्थियों के साथ भी इस सम्प्रदाय को जोड़ा जाता है। यह शरणार्थी भारत के विभिन्न भागों में पाये जाते हैं।

भारत के उपमहाद्वीप में कुछ ऐसे प्रयास भी किये जा रहे हैं, जो बौद्ध धर्म को पुनरुद्धार के प्रयास भी करते हैं। वास्तव में एक सिंहली साधु-अंगरिका देशपाण्डे ने 1891 में बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार के लिए संस्था बनायी थी। इस संस्था का नाम महाबोधि समाज रखा गया था और इसने बौद्ध शिक्षा को अपना लक्ष्य बनाया। इस संस्था ने बौध गया के मंदिर की मरम्मत की। हमारे संविधान के निर्माता बाबा साहब अम्बेडकर के प्रयत्नों से बौद्ध धर्म का बहुत बड़ा विकास 14 अक्टूबर 1956 में नागपुर, महाराष्ट्र में हुआ। उनके साथ महारो ने हजारों लोगों ने बौद्ध धर्म को अपनाया। अम्बेडकर इसी समुदाय के थे। महार के अतिरिक्त आगरा में चमड़े का काम करने वाले जाटवों ने भी थोड़े समय बाद बौद्ध धर्म को अपनाया। इन बौद्धों को प्राय: नव बौद्ध भी कहते हैं। इस नये बौद्ध धर्म से प्रभावित लोग अम्बेडकर को *बोधिसत्व अम्बेडकर* भी कहते हैं। अर्वाचीन भारत में ये सभी प्रकार के बौद्ध 0.8 प्रतिशत हैं।

### 28.1.4 जैन धर्म

भारत में जैन धर्म अपेक्षित रूप से बहुत थोड़े आकार में हैं। इनकी संख्या भारत में कुल जनसंख्या का एक-डेढ़ प्रतिशत है। वैसे इनका फैलाव सम्पूर्ण भारत में है। ये मुख्य रूप से राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और कर्नाटक में पाये जाते हैं। इसकी स्थापना महावीर वर्धमान ने की थी और यह स्थापना 540 ई. पू. 468 ई. पू. में हुई थी। जैन धर्म का भारत में नहीं अपितु विश्व में बहुत बड़ा प्रभाव रहा है। प्राचीन भारत में बौद्ध धर्म और ब्राह्मण धर्म ने जैन धर्म के केन्द्रीय सिद्धान्तों को अपनाया। बौद्ध और जैन धर्म ने अहिंसा को स्वीकार किया तथा इस तरह भारतीय संस्कृति के ये दो प्राथमिक सिद्धान्त रहे। मध्यकाल में जैन सिद्धान्तों ने हिन्दू सम्प्रदायों को प्रभावित किया। आधुनिक भारत में वाणिज्यिक और राजनीतिक जीवन में बड़े प्रभाव डाले हैं। गांधीजी पर भी अप्रत्यक्ष रूप से जैन धर्म का प्रभाव था। इसीलिए उन्होंने अहिंसा को अपना सिद्धान्त बनाया।

यद्यपि जैन धर्म के अनुयायी कम हैं लेकिन उससे प्रभावित लोग बहुत ज्यादा हैं। जैन धर्म ने अपने सिद्धान्तों को कोई 2500 वर्षों तक चलाया। इस धर्म में बहुत बड़ा धार्मिक साहित्य है। यह धर्म, धार्मिक महत्व के बहुत सारे ग्रन्थ जो जैन साधुओं ने बनाये हैं उनको सुरक्षित रखना अपना कर्तव्य समझता है और इसी कारण इस धर्म में कई धार्मिक ग्रन्थ हैं। जैन धर्म का बुनियादी विचार यह है कि वे कार्य जो एक व्यक्ति ने किये हैं उसके उद्धार के लिए महत्वपूर्ण हैं। व्यक्ति को जन्म से जो भी अर्जित प्रस्थिति मिली है, वह बेमतलब है। वे इस तथ्य में विश्वास रखते हैं कि त्रिरतन-सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन व सम्यक चरित्र-वह उन्हें संसार से मुक्ति प्रदान करेगा।

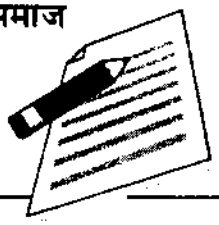

Notes

जैन धर्म के मानने वालों का ऐसा संगठन है– जिसमें साधु, साध्वियां, सामान्य आदमी और सामान्य स्त्रियाँ होती हैं। साधु और साध्वियां सम्प्रदाय के नियमों का पालन बहुत सख्ती से करते हैं। लेकिन साधारण व्यक्ति धर्मग्रन्थों के अनुसार आचरण करते हैं। एक जैन धर्मावलम्बी को किसी के जीवन को आहत नहीं करना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए, अपवित्र जीवन नहीं बिताना चाहिए, रात्रि भोजन निषेध, उन्हें जड़ मूल वाली सब्जी जैसे आलू, प्याज, लहसुन आदि नहीं खानी चाहिए या जिसके कई बीज हैं। यद्यपि जैन दो भागों में बंटे हैं – दिगम्बर और स्वेताम्बर। अधिकांश सिद्धान्त दोनों के लिए समान हैं। दोनों में अन्तर यह है कि दिगम्बर वस्त्रहीन, श्वेताम्बर सफेद वस्त्र पहनते हैं। यह पुरुष और स्त्री दोनों पर लागू होता है। जैन धर्मावलम्बियों में यह परिवर्तन 79वीं ई॰ के बाद हुआ।

जैन कई जातियों में बंटे हैं। कुछ विद्वानों का कहना है कि ये जातियाँ 60 से कम नहीं हैं। अधिकांश जैन धर्मावलम्बी व्यवसायी हैं। परन्तु कुछ धर्मावलम्बी अन्य धन्धे भी करते हैं जैसे कि कृषि और नौकरी। दक्षिण भारत में जैन चार समूहों में बंटे हैं। एक समूह मूर्तिपूजन – यह जाति हिन्दुओं के ब्राह्मणों की तरह है। जैनियों का यह बहुत बड़ा सम्प्रदाय अन्य जैनियों के साथ बैठकर खाना खाता है। सच्चाई यह है कि जैन जहाँ भी रहते हैं, अन्य लोगों के रीति-रिवाजों को अपना लेते हैं। उदाहरण के लिए, गुजरात की कुछ जैन जातियों ने अनुलोम विवाह को स्वीकार कर लिया है अर्थात् यहाँ गुजराती जैन निम्न जातियों की स्त्री से भी विवाह कर लेते हैं।

जैन धर्म के लम्बे इतिहास में कई सुधार आंदोलन भी हुए हैं। इन आंदोलनों का उद्देश्य परम्परागत विवाह को बनाए रखना है। अर्थात जैन धर्मावलम्बियों को अन्तर्वैवाहिक समूह की तरह रहना है। जैनियों को हिन्दुओं के साथ विवाह नहीं करना चाहिए। अगर करना ही हो तब जैन धर्म की अन्य जातियों में करें। कुछ जैन जातियों ने हिन्दू देवी-देवताओं की उपासना प्रारम्भ कर दी है। इसे छोड़ देना चाहिए। इस तरह का सुधार आंदोलन भारत के कुछ हिस्सों में सफल रहा है।

## पाठगत प्रश्न 28.2

निम्न में से कौन सा कथन सही अथवा गलत है, लिखिए:

(क) हर्षवर्धन और पाल सम्राटों ने बौद्ध धर्म को बहुत बड़ा संरक्षण दिया। ( )

(ख) कुछ विद्वान बौद्ध धर्म को शान्तिप्रिय और सुरक्षित मानते हैं। ( )

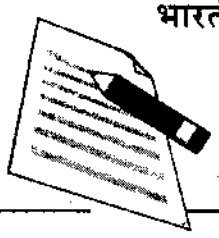

Notes

(ग) भारत की जनसंख्या का 25 प्रतिशत बौद्ध हैं। ( )

(घ) जैन 24 तीर्थंकरों को मानते हैं। ( )

(ङ) भारत में तिब्बती शरणार्थी जैन धर्म को मानते हैं। ( )

### 28.1.5 इसाई धर्म

इसाई धर्म एकेश्वरवादी है। इसमें सभी कार्य यीशु से प्रभावित दया से जुड़ा है। इसाई धर्म एक ऐतिहासिक धर्म है। इसका उद्‌गम यहूदी धर्म से है। इसाईयों का विश्वास है कि ईश्वर वह है जो यीशु न जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म पर कहा है। इसाई पुनर्जन्म की बात उस घटना के साथ जोड़ते हैं जब मर जाने के तीन दिन बाद यीशु मसीह पुनर्जीवित हो गये, उन्हीं को इसाई अपना ईश्वर समझते हैं। यह यीशु मसीह के साथ ही इसाई धर्म का प्रारम्भ माना गया है।

अपने 2000 वर्षों के इतिहास में इसाई धर्म ने अपनी अभिव्यक्ति विश्व में विभिन्न प्रकारों से की है। यह धर्म बहुत अधिक विभिन्नता का है क्योंकि इसके मानने वाले लाखों की तादात में हैं। इस धर्म के मानने वाले अनगिनत हैं फिर भी इस विभिन्नता में इसके कुछ सिद्धान्त सभी मानते हैं। इसाई धर्म विश्वास करता है कि परमात्मा ने यह बता दिया है कि कौन सी वस्तु उनके लिए बढ़िया है। कोई भी व्यक्ति जो ईश्वर तक पहुँचना चाहता है, उसे मानना चाहिए कि परमात्मा का अस्तित्व है और वह उन्हें पारितोषिक देता है जो उसकी खोज करते हैं। इसाई धर्म का केन्द्रीय विश्वास यह है कि विश्व में तीन वस्तुएँ हमेशा के लिए हैं: विश्वास, आशा और प्रेम। इन सबमें बहुत बड़ी वस्तु विश्व में अस्तित्व रखने वाली जितनी भी वस्तुएँ हैं उनके लिए प्यार। हर एक व्यक्ति को ईसा मशीह के पिता यानी ईश्वर पर निर्भर रहना चाहिए। यह ईश्वर ही जीवन में जो अच्छा है, उसका स्रोत हैं और जीवन जो आने वाला है उसका भी स्रोत रहेगा।

फिलिस्तीन को छोड़कर इसाई धर्म किसी भी देश की तुलना में भारत में यह सबसे पुराना धर्म है, रोम से भी प्राचीन-इसाई धर्म भारत में दो मुख्य आंदोलनों द्वारा अया और इन आंदोलनों का अंतराल लगभग 1000 वर्ष है। पहला आंदोलन ईसा मसीह के मरने के बाद की प्रारम्भिक शताब्दियों में हुआ। जब इसाई पर्यटक उद्योग के रास्तों से केरल के तट पर बसे । यहाँ इन पर्यटकों ने तटीय क्षेत्रों में इसाईयों के स्थायी समूह बनाए। इन लोगों का विश्वास है कि एपोस्टल थॉमस ने स्वयं यहाँ की चर्च को बनाया। ईसा की चौथी शताब्दी में इस बात के प्रमाण हैं कि यहाँ चर्च थे। यह भी पता लगा है कि इन चर्चों की विशेषता सिरीक भाषा के माध्यम से बनी हुई है, इनमें बिशप मेसेपोटामिया से आते थे। इसाईयों के इस समूह को सीरीयन इसाई कहते हैं।

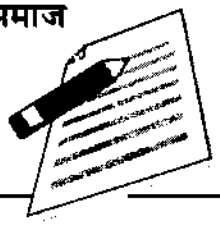



इसाईयों के भारत में आने का दूसरा आंदोलन 16वीं शताब्दी में हुआ, जब औद्योगिक केन्द्रों के माध्यम से यूरोप के यात्रियों को यहाँ का राजनीतिक नियंत्रण प्राप्त हुआ। यह आंदोलन भारत के सम्पूर्ण उप महाद्वीप में देखने को मिला। 1510 ई॰ में पुर्तगाल ने गोवा का आधिपत्य अपने पास ले लिया। इन पर्यटकों का विश्वास था कि वाणिज्य और धर्मान्तरण निकटता से जुड़े हुए हैं। मिशनरी जो पेशेवर रूप से स्थानीय लोगों का धर्मान्तरण करते थे, उन्होंने इस धर्म के भारत में लाने का दोबारा प्रयास किया। 16वीं शताब्दी के अन्त में इसाईयों को कुछ विशेष अधिकार मिले और अधिकांश इसाई रोमन कैथोलिक चर्च के सदस्य बन गये। डेनमार्क के राजा की सहायता से धर्म के इस क्षेत्र में 1706 में प्रोटेस्टेन्ट धर्मावलम्बियों का प्रवेश हुआ। 1858 ई॰ में जब ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा भारत में अपना वर्चस्व बढ़ाया तब इसाई धर्म यहाँ विकसित हुआ। आज भारत में इसाईयों की जनसंख्या लगभग 3 प्रतिशत है।

इसाई मिशनरी सामान्यतया भारत की परम्परागत सामाजिक व्यवस्था के विरोधी थे। यानी वे जाति व्यवस्था के खिलाफ थे। खिलाफ होने पर भी किसी वैकल्पिक व्यवस्था को वे नहीं बना सके। जिन लोगों का धर्मान्तरण हुआ, वे प्राय: निम्न जातियों के थे। यद्यपि उन्होंने इसाई धर्म को अपना लिया, लेकिन सामाजिक व्यवस्था में उनका दर्जा नहीं बदला। ऊँची जातियों ने अपने व्यवहार में कोई अन्तर नहीं किया। इसाई धर्मान्तरण के पहले उच्च जातियाँ जो व्यवहार निम्न जातियों के साथ करती थीं, धर्मान्तरण के बाद वही व्यवहार चलता रहा। उत्तर-पूर्व में रहने वाले आदिवासियों के साथ भी यही सलूक हुआ। अत: जिन जातियों ने इसाई धर्म को अपनाया उनमें कुछ परिवर्तन अवश्य आये। इनमें शिक्षा लोकप्रिय हुई। इसाई मिशनों ने उन आदिवासियों को जो जबरदस्ती हिन्दू बना दिये गये थे, उन्हें कानूनी सहायता दी। मिशनरियों के कारण उत्तर-पूर्व के आदिवासियों में रोमन लिपी का प्रवेश हुआ। परिणामस्वरूप इसाई धर्म एक ऐसा स्रोत बन गया जिसने लिपी को भी बदल दिया।

### 28.1.6 यहूदी धर्म

यहूदी धर्म के मानने वालों को यहूदी कहते हैं। पुराने भारतीय यहूदियों के घर या आवास कोचीन एवं महाराष्ट्र में हैं। इन दोनों स्थानों की बस्तियाँ बहुत छोटी संख्या में हैं। इनके लगभग 20,000 मकान हैं।

कोचीन के यहूदियों ने अपनी पहचान प्राचीन समय से बना रखी है। कहते हैं कि 1020 शताब्दी में कोचीन के राजा ने यहूदियों को कुछ विशेष अधिकार दिये थे। इन विशेष अधिकारों में हाथी की सवारी और राजकीय छतरी को लेकर चलना था। बाद में ये यहूदी दो समूहों में बंट गये, श्वेत यहूदी जिनकी त्वचा सफेद थी और जो अपने

आपको मौलिक यहूदी मानते थे, दूसरा समूह वह जिनका रंग काला था। यहूदियों के इन दोनों समूहों में खान-पान और विवाह के कोई सम्बन्ध नहीं थे।

कोचीन के यहूदी, महाराष्ट्र के यहूदियों से भिन्न हैं। महाराष्ट्र के यहूदियों को बेनेइज्राइल यानी इज्रराइल के पुत्र कहते हैं। कोकंणी भाषा बोलने वाले गाँवों में ये यहूदी तेल का धन्धा करते हैं क्योंकि तेली का धन्धा प्रतिष्ठित व्यवसाय नहीं हैं। इन्हें इन गाँवों में ऊँचा दर्जा नहीं दिया जाता। ये शनिवार को काम नहीं करते अत: उन्हें शनिवारी तेली भी कहते हैं। ये तेली यहूदियों के सभी धन्धों को करते हैं। इस बात के प्रमाण भी हैं कि इन तेली यहूदियों ने अपनी प्रतिष्ठा को सुधारने का काम भी किया है। इन्होंने इनकी भोजन की आदतों में सुधार किया है तथा विधवा विवाह पर निषेध लगा दिया है। कोचीन की तरह महाराष्ट्र के यहूदी भी दो प्रकार के हैं। इनमें एक प्रकार उन यहूदियों का है, जो स्थानान्तरण से यहाँ आ गये हैं और दूसरे काले यहूदी हैं। विद्वानों का कहना है कि यहूदियों के ये दो प्रकार वस्तुत: इनकी दो जातियाँ हैं।

## पाठगत प्रश्न 28.3

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(1) इसाई धर्म.....में विश्वास करता है।

(2) यहूदी धर्म को मानने वाले .....कहलाते हैं।

(3) महाराष्ट्र के यहूदी .....और.....भागों में बंटे हैं।

(4) .....ईश्वर का चुना हुआ प्रतिनिधि है।

(5) सन्.....में पुर्तगालियों ने गोवा का अधिग्रहण किया।

(6) कई उत्तर-पूर्वी भारत, आदिवासी समुदायों ने ..... को स्वीकार कर लिया।

### 28.1.7 इस्लाम धर्म

प्रस्तुत पाठ के इस भाग में हम इस्लाम धर्म के भारत में जो अनुयायी हैं, उनका विवरण देंगे। भारत की जनसंख्या में ये लगभग 13 प्रतिशत हैं। इन्डोनेशिया को छोड़कर भारत में मुसलमानों की संख्या सबसे अधिक है। *स्लम* अरबी का शब्द है।

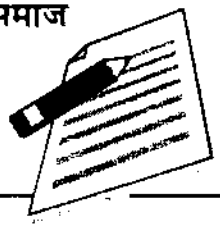



अर्थात शान्ति से रहना तथा सभी को रखना। इस अरबी शब्द से इस्लाम बनता है। अत: इस्लाम धर्म के अनुयायियों को ईश्वर के कानून को मानना चाहिए और इस तरह भाईचारे की भावना को रखना चाहिए। इस्लाम को परमात्मा ने अपने संदेश में यह कहा है कि किस भाँति मनुष्य जाति को रहना चाहिए। इतिहास के सभी युगों में ईश्वर ने अपने संदेश में कहा कि उन्हें मिल-जुलकर रहना चाहिए। आदम का पहला पेगम्बर वही था, वह मनुष्य भी था। पेगम्बरों की परम्परा में मोहम्मद भी था। इसका उल्लेख छठी शताब्दी में मिलता है। कुछ पेगम्बरों ने ईश्वर के संदेश को धार्मिक ग्रन्थों के स्वरूप में प्राप्त किया और यह धार्मिक ग्रन्थ जो अन्तिम या कुरान है। मुसलमानों के लिए यह पुस्तक आदरणीय है।

अब तक के सभी युगों में इस्लाम का बुनियादी सिद्धान्त एक ही है, जिसमें कोई बदलाव नहीं आया है। 7वीं शताब्दी में अरब में इस संदेश को व्यवस्थित किया गया। इस्लाम की तीन बुनियादी अवधारणाएँ हैं– (1) ईश्वर एक ही है अलतावहीद, (2) पैगम्बर की अवधारणा-अलरिसाला, (3) आज के जीवन के बाद को जीवन-अलअखीराह। इस्लाम की धारणा को इस विचार में रखा जा सकता है "कोई देवी-देवता नहीं है लेकिन परमात्मा है।" अर्थात ईश्वर एक है, वह केवल एक ही है। कुरान का ईश्वर पारदर्शी है। शक्तिशाली और दयालु है। इस्लाम धर्म के पाँच तत्व हैं– ईमान-मतलब हुआ ईश्वर में विश्वास। यह ईमान पुस्तकों में अभिव्यक्त है। संदेशों में प्राप्त है, और यह अंतिम दिन को बताता है जब सब कुछ समाप्त हो जाएगा। इन तत्वों के आधार पर पाँच व्यावहारिक तत्वों से ये ईमान बने हैं। इन ईमानों को इस्लाम का खंभा कहा जाता है। इनके पाँच तत्व इस भाँति हैं:

- इस्लाम की मुख्य विचारधारा यह है कि ईश्वर एक है और पैगम्बर ने जो कुछ कहा है, वह अंतिम है।
- काबा (मक्का) के सामने पाँच बार नमाज पढ़ना ईश्वर की उपासना है। ये पाँच बार है: सूर्योदय से पहले, दोपहर, दोपहर बाद, सूर्यास्त के बाद तथा सोने से पहले।
- गरीब को जकात देना– यह गरीबों के कल्याण के लिए है।
- रमजान के दिनों में भूखे रहना– इसमें सूर्योदय व सूर्यास्त के बीच में भूखे रहना, पानी नहीं पीना, धूम्रपान नहीं करना, यौन सम्बन्ध नहीं रखना अनिवार्य है।
- काबा में अपने जीवन काल में एक बार हज करना।

भारत में मुसलमान शहरों और गाँवों दोनों में मिलते हैं। कुछ आदिवासी समुदाय भी

जैसे कि गुर्जर इस्लाम धर्म को मानते हैं। गाँवों में इन्हें मुस्लिम जातियों की तरह भी जाना जाता है। मुसलमान सभी व्यावसायिक सेवाओं को करते हैं। वे जुलाहे होते हैं, तेली होते हैं, चूड़ियां बेचते हैं और मिश्ती होते हैं। एक तरह से उनका सम्बन्ध संरक्षक और कमीण का होता है। उनमें जजमानी व्यवस्था होती है। गाँवों में यह सब होते हुए भी निश्चित रूप से मुसलमान अपनी पृथक पहचान को रखते हैं।

भारत के मुसलमान जो गाँवों में रहते हैं इस बात की उनमें चेतना है कि उनका धर्म इस्लाम है, उनमें चचेरे भाई-बहिनों में विवाह की प्रथा है। वे औरतों को उत्तराधिकार के अधिकार देते हैं। उन्हें पर्दे में रहना पड़ता है। जहाँ कहीं मुसलमानों की बस्तियाँ हैं, वहाँ मस्जिद अवश्य है। इन मस्जिदों में बिना किसी वर्ग और व्यवसाय के भेदभाव के नमाज पढ़ने आते हैं। यद्यपि मुसलमानों में पृथक समूह होते हैं फिर भी धर्म उन्हें एक दूसरे के निकट लाता है और सभी लोग मिल-जुलकर मस्जिद में आते हैं तथा समुदाय के त्यौहारों में भागीदारी करते हैं। हिन्दुओं की तुलना में मुसलमानों में भिन्नता होने की भावना कम होती है।

### 28.1.8 सिख धर्म

सिख शब्द की उत्पत्ति पाली भाषा के शब्द सिख और संस्कृत शब्द *शिष्य* से हुई है। इन शब्दों का मतलब है, शिष्य। सिख दस गुरुओं के शिष्य हैं– इनके पहले गुरु गुरुनानक (1469-1539) थे। और अंतिम गुरु गोविन्द सिंह (1966-1708) हैं। सिख वह है, जो दस गुरुओं के साथ गुरु ग्रंथ साहिब को मानता है। यह ग्रन्थ सिखों के पांचवें गुरु अर्जुन देव ने 1604 में संकलित किया था। देखा जाय तो सिख हिन्दू धर्म के वैष्णव सम्प्रदाय का भक्ति का परिणाम है। गुरु नानक भक्ति परम्परा के प्रवक्ता थे।

नानक तलवंडी (लाहौर से 40 किलोमीटर दूर) में एक गाँव के राजस्व अधिकारी के पुत्र थे। उनका जन्म खत्री नामक जाति में हुआ था, जो अपने आपको क्षत्रीय कहते थे। 29 वर्ष की उम्र में उन्हें एक रहस्यात्मक अनुभव हुआ और इसके आधार पर उन्होंने कहा कि कोई हिन्दू नहीं है, कोई मुसलमान नहीं है। उन्होंने अपने सभी अनुयायियों में भेदभाव को समाप्त कर दिया। नानक एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहे और मनुष्य की समानता का संदेश दिया। पंजाब के गाँवों में नानक को इस संदेश के साथ याद किया जाता है: ''हिन्दुओं के लिए गुरुनानक सभी धर्मों के राजा हैं और सभी मुसलमानों के लिए संत हैं।''

नानक ने हिन्दुओं के अधिकांश परम्परागत विश्वासों को स्वीकार किया लेकिन उन्होंने अस्पृश्यता की निंदा की। उनके विचारों में ईश्वर पिता है, प्रेमी है, आचार्य है और सभी

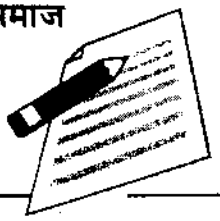



तरह के उपहारों को देने वाला है। ईश्वर का कोई स्वरूप नहीं है, वह निरंकार और निर्गुण है। उसे कई नामों से जाना जाता है जैसे कि रब, रहीम, गोविन्द, मुरारी और हरि। नानक ने पहले ईश्वर को कुमकरा नाम से जाना और बाद में इसी ईश्वर को सत् करतार अर्थात सत्य निर्माता या सतनाम से पुकारा। सिख धर्म में परमात्मा का प्रतीक ओम है।

व्यावहारिक स्तर पर समानता लाने के लिए गुरुनानक ने स्वतन्त्र सामुदायिक रसोई अर्थात लंगर की स्थापना की, जिसमें बिना किसी जाति और धर्म के भेदभाव के लोग एक ही पंगत में बैठकर खाते हैं। लंगर सिख धर्म का केन्द्रीय आधार है। देखा जाय तो नानक की धार्मिक व्यवस्था में लंगर मुख्य है। गुरु के बिना किसी को भी मोक्ष नहीं मिल सकता। गुरु वह है, जिसका सब आदर करते हैं तथा जिसकी सलाह को मानते हैं लेकिन गुरु की प्रतिष्ठा का यह अर्थ नहीं हैं कि उसकी पूजा होनी चाहिए। वह ईश्वर का अवतार नहीं। नानक ने अपने आपको ईश्वर का गुलाम माना है। नानक से प्रारम्भ होकर 9 अन्य गुरु हैं:

गुरु अंगद (1504-1552), अमरदास (1479-1574), रामदास (1534-1581), गुरु अर्जुन (1563-1606), हरगोविन्द (1595-1644), हराई (1630-1661), हरकिशन (1656-1664), तेगबहादुर (1661-1675) और गुरु गोबिन्द सिंह। इनमें से हर एक ने सिख धर्म के विकास के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया। नानक ने बडी दृढ़ता के साथ तपस्या को अस्वीकार किया। ज्ञानोदय के लिए उन्होंने शरीर को कष्ट देना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने आश्रम को स्वीकार किया और कहा कि एक व्यक्ति को अच्छे लोगों की सद्संगत करनी चाहिए। सिख को ईश्वर के नाम को जपना चाहिए, धार्मिक गीतों अर्थात् कीर्तन को मानना चाहिए। आश्रम और संगत से व्यक्ति को मोक्ष मिल सकता है।

भारत की कुल जनसंख्या में 2 प्रतिशत सिख हैं। अधिकांशत: ये पंजाब में पाये जाते हैं। सिख बहुत ही उद्यमी हैं और भारत के बाहर भी ये पाये जाते हैं। सिख हिन्दुओं के साथ में वैवाहिक सम्बन्ध रखते हैं लेकिन अपनी पृथक पहचान पर जोर देते हैं। यह पहचान लंगर और गुरुत्व की भावना से बंधी होती है। आज के युग में सिखों ने अपनी राजनीतिक पहचान भी बना रखी है। इसका उदाहरण गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और अकाली दल हैं। ये राजनीतिक संस्थाएँ सिखों की पृथक पहचान को बनाए रखती हैं। हाल में जो सिख गाँवों के अध्ययन मिले हैं, इनसे ज्ञात होता है कि इनमें भी कई स्तरीकरण हैं, जो जातियों की तरह काम करते हैं। ये सिख जातियाँ गुरुद्वारे में किसी के आने पर प्रतिबन्ध नहीं लगाती।

## पाठगत प्रश्न 28.4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(1) भारतीय जनसंख्या का कितना प्रतिशत इस्लाम धर्म को मानता है?

---

(2) इस्लाम का क्या अर्थ है?

---

(3) क्या मुसलमान भारतीय गाँवों में जजमानी व्यवस्था को मानते हैं?

---

(4) सिख पद का क्या आशय है?

---

(5) सिख कितने गुरुओं को मानते हैं?

---

## आपने क्या सीखा

- भारत एक बहुधार्मिक समाज है।
- भारत एक धर्म निरपेक्ष समाज है, जिसमें विश्व के विभिन्न धर्म हैं। ये धर्म अनेक सम्प्रदाय और पंथों में बंटे हुए हैं, यही नहीं विश्व के कई धर्म भारत में आकर विभिन्न सम्प्रदायों में बंट गये हैं।
- प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय में कई सदस्य हैं।
- हिन्दू धर्म में सैकड़ों देवी-देवता हैं और अनेकों दर्जन सम्प्रदाय एवं आंदोलन हैं।
- मुसलमान शिया और सुन्नी में बंटे हैं।
- जैन धर्म में दिगम्बर और श्वेताम्बर समूह हैं।
- दूसरे धर्म भी इसी तरह कई भागों में बंटे हैं।
- स्थानीय धार्मिक आंदोलन मुख्य रूप से दो कारणों से हुए हैं या तो इन आंदोलनों ने हिन्दू धर्म के संगठन को अस्वीकार किया है जैसे कि जाति

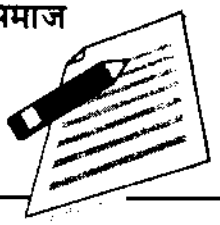

व्यवस्था। या इन धार्मिक आंदोलनों का विकास कतिपय धार्मिक नेताओं के कारण हुआ है, जिन्होंने मुक्ति का भिन्न मार्ग बताया है। अनिवार्य रूप से ऐसे नेता ने जाति की वैचारिकी को अस्वीकार किया है। इसमें हम ओशो पंथ (आचार्य ओशो रजनीश जिन्होंने इस पंथ को स्थापित किया है) या महर्षि महेश योगी जिन्होंने एक नये पंथ को स्थापित किया है।

- तुलनात्मक रूप से अन्य स्थानीय धार्मिक आंदोलन जो बाद में चलकर स्वतन्त्र धर्म बन गये (उदाहरणत: बौद्ध, जैन और सिख धर्म) जिन्होंने जाति की गैर बराबरी और मोक्ष की चर्चा नहीं की है।
- कई ऐसे धर्म भारत में आये जैसे कि इसाई और इस्लाम। जिनने जाति की गैर बराबरी को अस्वीकार किया और कहा कि यहाँ एक ऐसा समाज बनना चाहिए जिसमें मनुष्य-मात्र समानता के स्तर पर रहे।
- कपितय स्थानीय और बाहरी उत्पत्ति वाले धर्म यहाँ विकसित हुए, जिन्होंने अपनी संख्या को बढ़ाया। इन धर्मों के प्रति स्थानीय समुदाय आकर्षित हुए, ऐसे स्थानीय समूह में जाट हैं, जिन्होंने सिख धर्म को अपनाया। बनियों ने जैन ध र्म को अपनाया। निम्न जातियों ने इसाई और इस्लाम धर्म को अपनाया। इसके परिणामस्वरूप उच्च जातियों ने निम्न जातियों के साथ सम्पर्क कम कर दिये।
- सूफी सम्प्रदाय ऐसा है, जो विभिन्न समुदायों में एकता स्थापित करता है। हिन्दू और मुसलमान दोनों सूफी संतों की उपासना करते हैं। भक्ति आंदोलन के कई सन्तों ने भारत में सांझा संस्कृति को बनाने में बड़ा सहयोग दिया है।

## पाठन्त प्रश्न

निम्न प्रश्नों के उत्तर 100-200 शब्दों में दीजिए:

(1) बौद्ध धर्म के पतन के कारण बताइए।

(2) इस्लाम के केन्द्रीय विश्वास क्या हैं? इस धर्म के पाँच खम्भों का उल्लेख कीजिए।

(3) जैन धर्म का केन्द्रीय विश्वास क्या है?

(4) उन सम्प्रदायों का उल्लेख कीजिए जिनमें जैन धर्म बंटा हुआ है।

(5) सिखों के अनुसार ईश्वर के क्या तत्व हैं? लंगर का क्या तात्पर्य है?

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

**28.1**

(1) 83 प्रतिशत

(2) एशिया, अफ्रीका, केरेबियन द्वीप, फिजी और यूनाइटेड किंगडम

(3) सिन्धु घाटी की सभ्यता

(4) पारसी धर्म

(5) महाराष्ट्र और गुजरात

**28.2**

(क) सही

(ख) सही

(ग) गलत

(घ) सही

(ङ) गलत

**28.3**

(क) एकेश्वरवादी

(ख) यहूदी

(ग) श्वेत यहूदी और काले यहूदी

(घ) यीशु

(ङ) इसाई धर्म

**28.4**

(1) 13 प्रतिशत

(2) परमात्मा के नियमों के सामने झुक जाना और इस तरह सम्पूर्ण एकीकृत भाग बन जाना

(3) हाँ वे हैं

(4) इसका अर्थ शिष्य हैं

(5) दस गुरु